Nag Devta Pujan Vidhi

||कालसर्प दोष शांति प्रयोग||

(नागदेवता गायत्री, सर्पसूक्त, नवनाग स्तोत्र, सहस्रनामावलि)
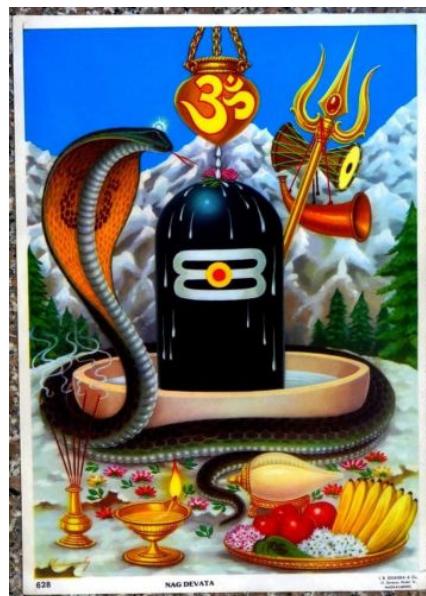
SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

राहु केतु मध्ये सप्तो विघ्ना हा कालसर्प सारिक।

सुतयासादि सकलादोषा रोगेन प्रवासे चरणं ध्रुवम्।।

अर्थात् राहु केतु के मध्य सात ग्रह आ जाते हैं तो रोग, शत्रु, स्थानहानि, शोक, संतान चिंता, प्रेतबाधा जनित दोष होते हैं।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार राहु का जन्म भरणी नक्षत्र में हुआ है जिसका अधिदेवता 'काल' है। केतु का जन्म नक्षत्र आश्लेषा है जिसका अधिदेवता 'सर्प' है इसलिये राहु-केतु जनित दोष को 'कालसर्प' दोष कहा जाता है। इसके अतिरिक्त सर्पयोग, विषयोग, शकट्योग, केमद्रुमयोग, भैरवयोग, कालयोग, महाकालयोग, वैदूषणयोग आदि मुख्य योगों की जानकारी जन्मपत्रिका से प्राप्त होती है। कालसर्प दोष, पितृदोष, सर्पभय, दुर्भाग्यवश सर्पहत्या, नाग के जोड़े का बिछोह हो जाने पर अथवा नागदेवता की कृपा प्राप्ति हेतु नागपूजा का आयोजन

करना चाहिये। भूमि में जिस स्थान पर निधि छिपि हो उस स्थान पर सर्प आदि शक्तियों का पहरा होता है। अतः उस स्थान पर नागपूजार्चन करने से नाग एवं सर्प संतुष्ट होकर उस स्थान को छोड़ देते हैं। कालसर्प दोष शांति निवारणार्थ हेतु नागपूजा को ग्रहमन्दिर में शिवलिंग, शालग्राम शिला, नागयंत्र अथवा सर्पयंत्र की स्थापना कर सम्पन्न किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त नागमन्दिर, शिवमन्दिर, विष्णुमन्दिर अथवा तीर्थस्थल में भी नागपूजन को सम्पन्न कर सकते हैं।

कालसर्प योग मुख्य लक्षण :- कालसर्प योग मनुष्य के भाग्य में अवरोध उत्पन्न करता है। परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त न होने से असफलता मिलती है। अपयश, कोर्ट कचहरी, चिंता, शत्रुभय, अकारण शत्रुता, धोखा, रोग, चोट-दुर्घटना, व्यापार या नौकरी में उन्नति न होना, परिवारिक कलेश, संतान बाधा, धनहानि, कर्ज, अभिचारिक कर्म आदि विकट परिस्थितियां कालसर्प दोष में उत्पन्न हो सकती हैं। जातक को स्वप्न में बार-बार काले रंग का सांप पीछा करता हुआ, उड़ता हुआ, रेंगता हुआ कांटने को दौड़ता हुआ दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त स्वप्न में काली वस्तुएं या भयानक दृश्य दिखाई देते हैं। मांस, शराब, परस्त्री

गमन एवं दूसरों को सताने वाले मनुष्य इस योग में अधिक दुःख प्राप्त करते हैं।

कालसर्प दोष पूजन समय :- सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, शनिवार अथवा बुध एवं शनि अमावस्या श्रेष्ठ है। प्रतिपदा, पंचमी, सप्तमी, नवमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या तिथि श्रेष्ठ है। इसके अतिरिक्त नक्षत्र, करण एवं योग पर भी विचार करना चाहिये। विवाहादि मांगलिक कार्य होने पर एक वर्ष तक नारायणबलि, नागबलि, कालसर्प शांति न करें। यदि विवाह का संवत् बदल गया हो तो 6 महीने पश्चात् करा सकते हैं।

विशेष कर्म :-

- प्रत्येक सोमवार शिवजी का व्रत रखें एवं जिस मन्दिर में शिवलिंग पर छत्ररूप में शेषनाग स्थापित न हो उस शिवलिंग पर तांबें या चांदी के नागदेवता छत्र रूप में अर्पित करना चाहिये।
- बुधवार को मूली का दान करने से राहु का तथा गुरुवार को करने से केतु का प्रभाव कम होता है।

- तराजू के एक पलड़े में स्वयं बैठें और दूसरे में कोयले रखकर तोलें। अपने भार के समान कोयले तुलवाकर गरीबों को दान दें। इसे तुलादान कहा जाता है।
- शेषनाग की शयया पर विराजित भगवान् विष्णु एवं लक्ष्मी के चित्र को ग्रह मन्दिर में स्थापित कर पूजन करें।
- प्रत्येक माह को नागपंचमी का व्रत रखकर नागपूजा करें। नाग पंचमी को नाग या शिवमन्दिर की साफ–सफाई करवायें। नाग या शिव मन्दिर में तांबा, चांदी या स्वर्ण का नाग–नागिन का जोड़ा अर्पित करें।
- पितृदोष में पितृसूक्त के 3100 पाठ करें या करवायें। पितृगायत्री के सवा लाख जप करें।
- श्रीमद्भागवत के दशवें स्कन्ध के षोडश अध्याय के 1008 पाठ करें।
- राहुकाल में चन्दन का इत्र शिवजी को अर्पित करें।
- राहु केतु के 51–51 हजार जप करें या करायें। रां राहवे नमः। कं केतवे नमः।
- त्रिकाल संध्या हनुमानजी या श्रीआकाश भैरव सहस्त्रनामावलि का पाठ करें।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

- प्रत्येक शनिवार को कुत्ते को दूध रोटी खिलायें।
- बुधवार, शनिवार को राहुकाल में राहुमंत्र का जप करें अथवा रात्रि में जप करें।
- सर्पाकार चांदी की अभिमंत्रित अंगुठी मध्यमा अंगुलि में पहनें।
- राहुकाल में एक नारियल 43 दिन तक नदी में बहायें।
- 11 सोमवार शिवमन्दिर में रुद्राभिषेक करायें। शिवजी को नागकेसर के बीज अर्पित करें।
- सम्भव हो तो सपेरे को जीवित सर्प का मूल्य देकर सर्प को जंगल में मुक्त करायें।
- नागदेवता से सम्बन्धित यथासम्भव ग्रन्थ या पुस्तक को मन्दिर आदि में वितरित करें।
- नागगायत्री या शिवमंत्र का उच्चारण करते हुए ब्रह्ममूहर्त में वटवृक्ष की नित्य 41 दिन तक 108 परिक्रमा करें।
- देवता के रूप में भगवती दुर्गा, श्री आकाश भैरव, हनुमानजी या भगवान् नीलकण्ठ की उपासना करना उत्तम होता है।

- नित्य 108 लोटे दुग्धमय जल से शिवलिंग को स्नान करायें। स्नान पश्चात् चन्दन से शिवलिंग पर सर्पाकार की आकृति बनाये।

श्रेष्ठ एवं शीघ्र लाभ के लिये अधिक से अधिक प्रयोग करने या करवाने का प्रयास करें।

ध्यानम् :-

अनन्तपद्म पत्राद्यं फणाननेकतोज्जवलम्।
दिव्याम्बरधरं देवं रत्नकुण्डल मण्डितम्।1।
नानारत्नपरिक्षिप्तं मुकुटं द्युतिरंजितम्।
फणमणिसहस्रोद्यै रसंख्यै पन्नगोत्तमे।2।
नानाकन्या सहस्रेण समन्तात्परिवारितम्।
दिव्याभरणं दिप्तांगं दिव्यचन्दन चर्चितम्।3।
कालाग्निमिव दुर्धर्षं तेजसादित्य सन्निभम्।
ब्रह्माण्डाधार भूतं त्वां यमुनातीर वासिनम्।4।
भजेऽहंदोष शान्त्यैत्र पूजये कार्यसाधकम्।
आगच्छ कालसर्पाख्य दोषं मम निवारयः।5।

आसनम् - नवकुलाधिपं शेषं शुभ्रकच्छप वाहनम्।

नानारत्न समायुक्तं आसनं प्रतिगृह्यताम्।।

पाद्यम् - अनन्त प्रिय शेषं च जगदाधार विग्रह।

पाद्यग्रहाणभक्तयात्वं काद्रवेय नमोऽस्तुते।।

अर्घ्यम् - काश्यपेयं महाघोरं मुनिभिर्वन्दित प्रभो।

अर्घ्यं गृहाण सर्वज्ञ भक्त्या मां फलदायक।।

आचमनीयम् - सहस्त्रणरूपेण वसुधारक प्रभो।

गृहाणाचमनं दिव्यं पावनं च सुशीलतम्।।

पंचामृत स्नानम् - पंचामृत गृहाणेदं पावनं स्वभिषेचनम्।

बलभद्रावतारेश क्षेमं कुरु मम प्रभो।।

वस्त्रम् - कौशेय युग्मदेवेश प्रीत्या तव मयार्पितम्।

पन्नगाधीश नागेन्द्र तार्क्ष्यशत्रो नमोऽस्तुते।।

यज्ञोपवीतम् - सुवर्ण निर्मितं सूत्रं पीतं कण्ठोपहारकम्।

अनेकरत्न संयुक्तं सर्पराज नमोऽस्तुते।।

प्रमुख नागपूजनम् – ॐ शेषाय नमः। ॐ वासुकायै नमः। ॐ कर्कोटकायै नमः। ॐ शंखाय नमः। ॐ ऐरावतायै नमः। ॐ कम्बलायै नमः। ॐ धनंजयायै नमः। ॐ महानीलायै नमः। ॐ पद्मायै नमः। ॐ अश्वतरायै नमः। ॐ तक्षकायै नमः। ॐ एलापर्णायै नमः। ॐ महापद्मायै नमः। ॐ धृतराष्ट्रयै नमः। ॐ बलाहकायै नमः। ॐ शंखपालायै नमः। ॐ महाशंखायै नमः। ॐ पुष्पदंष्ट्रायै नमः। ॐ शुभाननायै नमः। ॐ शंकुरोमायै नमः। ॐ बहुलायै नमः। ॐ वामनायै नमः। ॐ पाणिन्यै नमः। ॐ कपिलायै नमः। ॐ दुर्मुखायै नमः। ॐ पतंजल्यै नमः।

नागिनी देवता पूजनम्– ॐ जरत्कार्यै नमः। ॐ जगद्गौर्यै नमः। ॐ मनसादेव्यै नमः। ॐ सिद्धयोगिन्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ नागभागिन्यै नमः। ॐ शैव्यै नमः। ॐ नागेश्वर्यै नमः। ॐ जरत्कारुप्रियायै नमः। ॐ आस्तीकमातायै नमः। ॐ विषहरायै नमः। ॐ महाज्ञानयुतायै नमः।

कालीय नाग पूजन :– कालीय नाम नागसौ विषरूपो भयंकरः।

नारायणेन संपृष्टो दोषो क्षेमकरो भव।। ॐ भूर्भुवः स्वः कालीय सर्पाय नमः।

अंगदेवता पूजनम् :- ॐ सहस्रधारिण्यै नमः पादौ पूजयामि। ॐ अनद्याय नमः गुल्फौ पूजयामि। ॐ विषदंताय नमः जंघौ पूजयामि। ॐ मंदगतये नमः जानु पूजयामि। ॐ कृष्णाय नमः कटिं पूजयामि। ॐ पित्रे नमः नाभिं पूजयामि। ॐ श्वेताय नमः उदरं पूजयामि। ॐ उरगाय नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ कालिकाय नमः भुजौ पूजयामि। ॐ जम्बूकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ द्विजिह्वाय नमः मुखं पूजयामि। ॐ मणिभूषणाय नमः ललाटे पूजयामि। ॐ शेषाय नमः शिरं पूजयामि। ॐ अनन्ताय नमः सर्वांगं पूजयामि।

||नवनाग स्तोत्रम्||

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।

शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।।

एतानि नवनामानि नागानां च महात्मनाम्।

सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः।।

तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।

||सर्पसूक्त||

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनाग पुरोगमाः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।1।

विष्णुलोके च ये सर्पाः वासुकिः प्रमुखादयः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।2।

काद्रवेयाश्च ये सर्पाः मातृभक्ति परायणाः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।3।

इन्द्रलोके च ये सर्पाः तक्षको प्रमुखादयः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।4।

सत्यलोके च ये सर्पाः वासुकिना च रक्षिताः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।5।

मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटः प्रमुखादयः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।6।

समुद्रतीरे ये सर्पाः ये सर्पाः जलवासिनः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।7।

रसातले च ये सर्पाः अनन्तादि महाबलाः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।8।

सर्पसत्रे तु ये सर्पा आस्तिकेन च रक्षिताः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।9।

धर्मलोके च ये सर्पाः वैतरण्यां समाश्रिताः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।10।

पर्वताणां च ये सर्पाः दरीसन्धिषु संस्थिताः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।11।

खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।12।

पृथिव्यां चैव ये सर्पाः ये च साकेतवासिनः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।13।

सर्वग्रामेषु ये सर्पाः वसन्ति सर्वे स्वच्छन्दाः।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।14।

ग्रामे वा यदिवारण्ये ये सर्पाः प्रचरन्ति च।

नमोऽस्तुतेभ्यः सर्पेभ्यः सुप्रीताः मम सर्वदा।15।

नाग गायत्री मंत्र :- 'ॐ नवकुल नागाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्।' मुख्य पूजन जप से ही सम्पन्न होता है। अतः सवा लाख जप अवश्य करें। अगर पीड़ीत मनुष्य सवा लाख जप करने में सक्षम न हो तो विश्वसनीय कर्मकाण्डी विद्वान के माध्यम से जप करवा सकते हैं।

||नाग सहस्रनामावलि||

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीनागदेवसहस्रनाम मंत्रस्य अग्निऋषिः सर्वाणिछन्दः तक्षो देवता क्षं बीजं ह्रीं शक्तिः नृं हृदयम् क्लीं कीलकं विषं इति अस्त्रम् अमृतं इति कवचं अनन्तशेषतक्षकं इति परमो मंत्रः श्री अनन्तादिनवकुल नागदेवताप्रीत्यर्थं कालसर्प दोष परिहारार्थं मम सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

सहस्रनामावलि :-

प्रत्येक नाम से जप, हवन, तर्पण अथवा पुष्पार्चन किया जा सकता है। होम के समय नमः के पश्चात् स्वाहा का तथा तर्पण के समय अन्त में तर्पयामि नमः का उच्चारण करना चाहिये।

ॐ अनन्ताय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ वासुकिये नमः। ॐ शंखपालाय नमः। ॐ महापद्माय नमः। ॐ कंबलाय नमः। ॐ कर्कोटकाय नमः। ॐ कुलिकाय नमः। ॐ फणिराझे नमः। ॐ स्थिराय नमः। ॐ प्रभवे नमः। ॐ भीमाय नमः। ॐ प्रवराय नमः। ॐ वरदाय नमः। ॐ वराय नमः। ॐ मणिमण्डलभूषिताय नमः। ॐ सर्वात्मने नमः। ॐ सर्वविख्याताय नमः। ॐ सर्वस्मै नमः। ॐ सहस्रपदे नमः। ॐ गूढगुल्फाय नमः। ॐ हेमजंघाय नमः। ॐ दिगंबराय नमः। ॐ गंभीराय नमः। ॐ वाताशनाय नमः। ॐ उरगाय नमः। ॐ कालीयाय नमः। ॐ कम्बुकण्ठाय नमः। ॐ विषकलाय नमः। ॐ मणिभूषणाय नमः। ॐ सुलक्षणाय नमः। ॐ सर्वज्ञाय नमः। ॐ भयाय नमः। ॐ गरिम्णे नमः। ॐ गर्विणे नमः। ॐ सर्वांगाय नमः। ॐ सर्वभावनाय नमः। ॐ सर्वभूतहराय नमः। ॐ वृत्तये नमः। ॐ निवृत्तये नमः। ॐ नियंताय नमः। ॐ शाश्वताय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ अर्हणाय नमः। ॐ अभिवाद्याय नमः। ॐ महाकर्मणे नमः। ॐ उन्मत्ताय नमः। ॐ प्रच्छन्नाय नमः। ॐ पातालवासिने नमः। ॐ महायशसे नमः। ॐ महाकायाय नमः। ॐ पन्नगाय नमः। ॐ शंकरभूषणाय नमः। ॐ अनन्तशिखिने नमः। ॐ

पातालवासाय नमः। ॐ यशकर्त्रे नमः। ॐ विश्वरूपाय नमः। ॐ महाहनवे नमः। ॐ लोकपालाय नमः। ॐ अंतर्हितात्मने नमः। ॐ प्रसादाय नमः। ॐ पवित्राय नमः। ॐ महते नमः। ॐ नियमाय नमः। ॐ नियमाश्रिताय नमः। ॐ यमुनान्तर्वासिने नमः। ॐ विषग्रहाय नमः। ॐ विषहन्त्रे नमः। ॐ नागेन्द्राय नमः। ॐ नागकन्या परिवृत्ताय नमः। ॐ नागलोकाधिपतये नमः। ॐ शौरये नमः। ॐ अपराजिताय नमः। ॐ स्वकर्मणे नमः। ॐ सर्वभूताय नमः। ॐ आवये नमः। ॐ अविकाराय नमः। ॐ निधये नमः। ॐ सहस्राक्षाय नमः। ॐ विशालाक्षाय नमः। ॐ शनवे नमः। ॐ केतवे नमः। ॐ ग्रहाय नमः। ॐ ग्रहपतये नमः। ॐ कालघ्ने नमः। ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ विश्वात्मने नमः। ॐ जगत्पतये नमः। ॐ सर्वभूतात्मने नमः। ॐ सर्वेश्वराय नमः। ॐ चंचलाय नमः। ॐ चपलाय नमः। ॐ महाबलाय नमः। ॐ उत्कंठाय नमः। ॐ अंबुजाय नमः। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः। ॐ आह्निककर्मणे नमः। ॐ अमितविक्रमाय नमः। ॐ अपराजिताय नमः। ॐ अश्वदाय नमः। ॐ अग्निनेत्राय नमः। ॐ अग्निवपुषे नमः। ॐ अत्रिपुत्राय नमः। ॐ अनघाय नमः। ॐ आदिनाथाय नमः। ॐ साधकाय नमः। ॐ मंत्राय नमः। ॐ योगिने नमः। ॐ योज्याय नमः। ॐ

महाबीजाय नमः। ॐ महारेतसे नमः। ॐ महाबलाय नमः। ॐ सर्वज्ञाय नमः। ॐ सुबीजाय नमः। ॐ बीजवाहनाय नमः। ॐ भूपतये नमः। ॐ विश्वरूपाय नमः। ॐ स्वयंश्रेष्ठाय नमः। ॐ बलाधीशाय नमः। ॐ अबलाय नमः। ॐ अट्टाहासाय नमः। ॐ अनाकुलाय नमः। ॐ अघनाशिने नमः। ॐ अनघाय नमः। ॐ अप्सुनिलयाय नमः। ॐ अर्हाय नमः। ॐ अष्टमूर्तये नमः। ॐ अनिर्विण्णयाय नमः। ॐ अचंचलाय नमः। ॐ अष्टदिक्पालमूर्तये नमः। ॐ अन्तकराय नमः। ॐ गणाय नमः। ॐ गणकर्त्रे नमः। ॐ कामाय नमः। ॐ सर्वभावकराय नमः। ॐ सुरूपाय नमः। ॐ तेजसे नमः। ॐ तेजस्करनिधये नमः। ॐ उदग्राय नमः। ॐ दीर्घाय नमः। ॐ हरिकेशाय नमः। ॐ सुतीर्थाय नमः। ॐ सिद्धार्थाय नमः। ॐ सर्वशुभकराय नमः। ॐ अरूपाय नमः। ॐ अनन्तरूपाय नमः। ॐ अभयंकराय नमः। ॐ अक्षराय नमः। ॐ अभ्रवपुषे नमः। ॐ अव्याय नमः। ॐ अनादिनिधनाय नमः। ॐ अघशत्रवे नमः। ॐ अमराविघ्ने नमः। ॐ हर्त्रे नमः। ॐ अनादये नमः। ॐ अनुत्तमाय नमः। ॐ अह्वे नमः। ॐ अमोघाय नमः। ॐ बहुरूपाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ ऊर्ध्वरितसे नमः। ॐ सेनापतये नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ अहश्चराय नमः। ॐ नक्तंचराय नमः। ॐ

निम्नमन्यवे नमः। ॐ सुवर्चसाय नमः। ॐ गजघ्ने नमः। ॐ दैत्यघ्ने नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ लोकधाम्ने नमः। ॐ गुणकराय नमः। ॐ सिंहशार्दूलरूपाय नमः। ॐ कालयोगिने नमः। ॐ महानादाय नमः। ॐ सर्वकामाय नमः। ॐ निशाचराय नमः। ॐ बहुधराय नमः। ॐ स्वर्भानवे नमः। ॐ गतये नमः। ॐ नित्यप्रियाय नमः। ॐ नित्यनर्ताय नमः। ॐ नर्तकाय नमः। ॐ सर्वलालसाय नमः। ॐ घोराय नमः। ॐ नित्याय नमः। ॐ गिरिसहायाय नमः। ॐ अनभसे नमः। ॐ विजयाय नमः। ॐ व्यवसायाय नमः। ॐ अतीन्द्रियाय नमः। ॐ अघर्षणया नमः। ॐ घर्षणात्मने नमः। ॐ कामनाशकाय नमः। ॐ सुसहाय नमः। ॐ मध्यमाय नमः। ॐ तेजोपहारिणे नमः। ॐ बलदात्रे नमः। ॐ भूरिदाय नमः। ॐ अर्थाय नमः। ॐ अवराय नमः। ॐ गरलाशाय नमः। ॐ गंभीराय नमः। ॐ गंभीरबलवाहनाय नमः। ॐ बृहत्कर्णस्थितये नमः। ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः। ॐ महाकायाय नमः। ॐ महाननाय नमः। ॐ अहायाय नमः। ॐ अमृताय नमः। ॐ अघोरवीर्याय नमः। ॐ अवृंगाय नमः। ॐ अविघ्नाय नमः। ॐ अमिततेजसे नमः। ॐ अतिवंद्याय नमः। ॐ अष्टांगन्यासरूपाय नमः। ॐ अनिलाय नमः। ॐ अवशाय नमः। ॐ अनावरणीयाय नमः।

ॐ तीक्ष्णतापाय नमः। ॐ सहाय नमः। ॐ कर्मकालविदे नमः। ॐ समुद्राय नमः। ॐ वडवामुखाय नमः। ॐ हुताशनसहायाय नमः। ॐ प्रशान्तात्मने नमः। ॐ हुताशनाय नमः। ॐ उग्रतेजसे नमः। ॐ जन्याय नमः। ॐ विजयकालविदे नमः। ॐ ज्योतिषाम्नायाय नमः। ॐ सिद्धये नमः। ॐ सर्वविग्रहाय नमः। ॐ शिखने नमः। ॐ ज्वालिने नमः। ॐ मूर्तिदाय नमः। ॐ भुजंगाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ तेजस्विने नमः। ॐ शंखाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ अश्वतराय नमः। ॐ धृतराष्ट्राय नमः। ॐ पणविने नमः। ॐ कालियाय नमः। ॐ कपालाय नमः। ॐ तालिने नमः। ॐ खलिने नमः। ॐ कालात्मकवंटकाय नमः। ॐ नक्षत्रविग्रहमनसे नमः। ॐ गुणबुद्धये नमः। ॐ भावाय नमः। ॐ अनामयाय नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ विश्ववाहवे नमः। ॐ विभावाय नमः। ॐ सर्वगाय नमः। ॐ विमोदनाय नमः। ॐ सुराख्याय नमः। ॐ हिरण्यकवचधराय नमः। ॐ भेदभंजकाय नमः। ॐ बलहारिणे नमः। ॐ महीचारिणे नमः। ॐ अशोकाय नमः। ॐ अनुकूलाय नमः। ॐ अमिताशनाय नमः। ॐ अरण्यनासिने नमः। ॐ अप्रभावाय नमः। ॐ अनलाय नमः। ॐ स्नुवाय नमः। ॐ सर्वतुर्यविनाशिने नमः। ॐ सर्वतापपरिग्रहाय नमः। ॐ

व्यालरूपाय नमः। ॐ गुहावासिने नमः। ॐ गुहाय नमः। ॐ मालिने नमः। ॐ तरंगविदे नमः। ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः। ॐ अहोरात्राय नमः। ॐ अमृत्यवे नमः। ॐ अकारादिहकारान्ताय नमः। ॐ अनिमिषाय नमः। ॐ अस्वरूपाय नमः। ॐ अग्रण्याय नमः। ॐ महिषाय नमः। ॐ विकालदृगे नमः। ॐ सर्वकर्मबंधविमोचनाय नमः। ॐ असुरेन्द्राणां बंधनाय नमः। ॐ युधिशत्रुविनाशिने नमः। ॐ सांख्यप्रसादाय नमः। ॐ दुर्वाससे नमः। ॐ सर्वशत्रुनिषेविताय नमः। ॐ प्रस्कन्दनाय नमः। ॐ विभागशयाय नमः। ॐ अनुकूलाय नमः। ॐ अप्रथिताय नमः। ॐ असंख्येयाय नमः। ॐ अन्नपतये नमः। ॐ अमृतपतये नमः। ॐ अजिताय नमः। ॐ यज्ञांगविदे नमः। ॐ सर्वचारिणे नमः। ॐ दुर्वासहृदये नमः। ॐ वासनाय नमः। ॐ सर्ववासाय नमः। ॐ हेमांगाय नमः। ॐ अमराय नमः। ॐ धरोत्तमाय नमः। ॐ लोहिताय नमः। ॐ महाज्ञानाय नमः। ॐ विजयाय नमः। ॐ विशाखाय नमः। ॐ सर्वकामदाय नमः। ॐ सर्वकालप्रसादाय नमः। ॐ सुबलाय नमः। ॐ बलारूपधृगे नमः। ॐ अपांनिधये नमः। ॐ अपांपतये नमः। ॐ असुरघातिने नमः। ॐ अमरप्रियाय नमः। ॐ अधिष्ठानाय नमः। ॐ अरविन्दप्रियाय नमः। ॐ अरविन्दवदनाय नमः। ॐ

अष्टसिद्धिदाय नमः। ॐ संग्रहाय नमः। ॐ निग्रहाय नमः। ॐ मुख्याय नमः। ॐ अमुख्याय नमः। ॐ सर्वोपरिनिवासनाय नमः। ॐ देहाय नमः। ॐ सर्वकामवराय नमः। ॐ महावेगाय नमः। ॐ वसुवेगाय नमः। ॐ सुवर्चस्विने नमः। ॐ बहुरश्मने नमः। ॐ अंशवे नमः। ॐ रौद्ररूपाय नमः। ॐ अवशाय नमः। ॐ जितात्मने नमः। ॐ आकाशनिर्विरूपाय नमः। ॐ सर्वज्ञाय नमः। ॐ निशांपतये नमः। ॐ अतिदीप्ताय नमः। ॐ सहस्रदाय नमः। ॐ मनोवेगाय नमः। ॐ सर्ववासिने नमः। ॐ श्रद्धावासिने नमः। ॐ अकाराय नमः। ॐ उपवेशकराय नमः। ॐ आत्मभिदे नमः। ॐ संलग्नाय नमः। ॐ अनन्तशयाय नमः। ॐ अनन्तब्रह्माण्डपतये नमः। ॐ अशिवविनाशाय नमः। ॐ अतिभूषणाय नमः। ॐ अविद्याधराय नमः। ॐ सिद्धसाधनाय नमः। ॐ महर्षये नमः। ॐ सिद्धयोगिने नमः। ॐ दक्षिणाय नमः। ॐ प्राच्यै नमः। ॐ यशसे नमः। ॐ अर्थकराय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ भावनाय नमः। ॐ कामाय नमः। ॐ उन्मादाय नमः। ॐ भिक्षवे नमः। ॐ विषयाय नमः। ॐ मृदवे नमः। ॐ महीसैन्यायै नमः। ॐ विशाखाय नमः। ॐ षष्ठिभागाय नमः। ॐ रिपुभिदे नमः। ॐ चतुरस्तंभाय नमः। ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः। ॐ ताल्घनाय नमः। ॐ मधवे नमः। ॐ

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

अतिप्रियाय नमः। ॐ अकल्मषाय नमः। ॐ अकलयाय नमः। ॐ अतुलितबलाय नमः। ॐ अचलरूपाय नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ अक्षोभ्याय नमः। ॐ अलक्ष्मीनाशकाय नमः। ॐ मधुकलाय नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ वाजसेनाय नमः। ॐ आश्रमपूजिताय नमः। ॐ ब्रह्मचारिणे नमः। ॐ लोकचारिणे नमः। ॐ विचारविदे नमः। ॐ सर्वचारिणे नमः। ॐ अतिसुन्दराय नमः। ॐ मनोहराय नमः। ॐ अद्वैताय नमः। ॐ अमितप्रभवाय नमः। ॐ अवनिपतये नमः। ॐ अपवर्गप्रदाय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ निशाचारिणे नमः। ॐ पिनाकधृषे नमः। ॐ विभिन्नस्थाय नमः। ॐ नन्दिने नमः। ॐ नन्दिकराय नमः। ॐ अर्चिष्मते नमः। ॐ निमित्ताय नमः। ॐ नन्दनाय नमः। ॐ अघहारिणे नमः। ॐ विरंचिने नमः। ॐ विश्ववरदाय नमः। ॐ ज्ञानरूपाय नमः। ॐ विश्वचक्षुषे नमः। ॐ जगन्मायिने नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ विद्यानिधये नमः। ॐ अमदाय नमः। ॐ गजरूपाय नमः। ॐ सत्यधराय नमः। ॐ सुराधीशाय नमः। ॐ समस्तसाक्षिणे नमः। ॐ संसाराय नमः। ॐ त्रिलोकाय नमः। ॐ अमोघविक्रमाय नमः। ॐ पुष्टाय नमः। ॐ वक्रगतये नमः। ॐ कान्तिदाय नमः। ॐ कामरूपिणे नमः। ॐ कामयोगिने नमः। ॐ कमलाक्षाय नमः। ॐ शुद्धाय

नमः। ॐ दीर्घतुण्डाय नमः। ॐ सुराध्यक्षाय नमः। ॐ योगाध्यक्षाय नमः। ॐ बीजाध्यक्षाय नमः। ॐ बलाय नमः। ॐ इतिहराय नमः। ॐ निशाकराय नमः। ॐ दलाय नमः। ॐ अह्नाय नमः। ॐ वेदर्भाय नमः। ॐ भारवर्जिताय नमः। ॐ आपदाय नमः। ॐ गणप्रियाय नमः। ॐ गणप्रियसुहृदे नमः। ॐ गणविहरणानित्याय नमः। ॐ गणप्रतीतिवर्धनाय नमः। ॐ अतिधूम्राय नमः। ॐ गणगर्वपरिहर्त्रे नमः। ॐ गणप्रवृत्तमानसाय नमः। ॐ महाश्चलाय नमः। ॐ अग्निज्वालाय नमः। ॐ महाघोराय नमः। ॐ महामेघवासिने नमः। ॐ अमरमर्दनाय नमः। ॐ भयंकराय नमः। ॐ नैष्कराय नमः। ॐ अभयदात्रे नमः। ॐ बहुप्रसादाय नमः। ॐ अनागताय नमः। ॐ गोत्रार्तिनाशिने नमः। ॐ गोत्रप्रियाय नमः। ॐ गोत्रपतये नमः। ॐ गोपदप्रियाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ अविनाशाय नमः। ॐ गौतमामृत्युपरिहराय नमः। ॐ गौतमीतीर्थदाय नमः। ॐ गौतमार्तिसंहारिणे नमः। ॐ महायशदात्रे नमः। ॐ महाकायाय नमः। ॐ सर्ववाह्निमणिप्रियाय नमः। ॐ सुवर्णाय नमः। ॐ कुलवर्णाय नमः। ॐ महागर्भपरायणाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ उत्सर्गाय नमः। ॐ लघवे नमः। ॐ महाग्रीवाय नमः। ॐ शरण्याय नमः। ॐ सिद्धसेनाय नमः। ॐ

अव्यग्राय नमः। ॐ गणाध्यक्षाय नमः। ॐ गणसाध्याय नमः। ॐ गणनायकाय नमः। ॐ ज्योतिश्चराय नमः। ॐ सिद्धवेदाय नमः। ॐ लीलासेविताय नमः। ॐ पूर्णाय नमः। ॐ परमसुन्दराय नमः। ॐ नित्याय नमः। ॐ कवये नमः। ॐ लोककर्मिणे नमः। ॐ महाकर्त्रे नमः। ॐ अनौषधाय नमः। ॐ परब्रह्मणे नमः। ॐ कालपतये नमः। ॐ नीतये नमः। ॐ अनीतये नमः। ॐ शुद्धात्मने नमः। ॐ स्वस्तिभावाय नमः। ॐ स्वस्तिदाय नमः। ॐ शूरमदाय नमः। ॐ दिव्यपापघ्नाय नमः। ॐ भक्तकल्पाय नमः। ॐ कल्याणगुरवे नमः। ॐ सहस्रशीर्षे नमः। ॐ निरविग्रहाय नमः। ॐ शोभनाय नमः। ॐ अंगलुब्धाधाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ वर्चस्विने नमः। ॐ हविषे नमः। ॐ गणभूतये नमः। ॐ गणवल्लभाय नमः। ॐ मूतर्ये नमः। ॐ गणर्स्वस्मै नमः। ॐ गणप्राणाय नमः। ॐ गणस्तुताय नमः। ॐ भागकराय नमः। ॐ भामिने नमः। ॐ कलिनाशनाय नमः। ॐ महायोगिने नमः। ॐ महात्मने नमः। ॐ भुवनेश्वराय नमः। ॐ भूतभव्याय नमः। ॐ भावितात्मने नमः। ॐ भूतनिकराय नमः। ॐ शरण्याय नमः। ॐ वरेण्याय नमः। ॐ सुसंयुक्ताय नमः। ॐ परद्राणाय नमः। ॐ प्रीतात्मने नमः। ॐ महाबुद्धये नमः। ॐ प्राप्तबाणाय नमः। ॐ गरिष्ठदृशे

नमः। ॐ गौरकीर्तये नमः। ॐ गौरिप्रणयाय नमः। ॐ गौरिवरप्रदाय नमः। ॐ गौरिप्रियाक्षाय नमः। ॐ गौरीशनन्दनाय नमः। ॐ मनोवान्छितसिद्धकृते नमः। ॐ महामूर्ध्ने नमः। ॐ महानेत्राय नमः। ॐ महान्तकाय नमः। ॐ महाहनवे नमः। ॐ महानासाय नमः। ॐ महाग्रीवाय नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ बभ्रुवाहनाय नमः। ॐ आनन्दितमनसे नमः। ॐ कृतमंगलाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ प्रचण्डवेगाय नमः। ॐ सुमनसे नमः। ॐ धर्मवरुणाय नमः। ॐ समायुक्ताय नमः। ॐ कृतिनांवराय नमः। ॐ आस्यदंतपंक्तये नमः। ॐ श्रेष्ठाय नमः। ॐ कारुणिकाय नमः। ॐ बोधकाय नमः। ॐ समलोकज्ञाय नमः। ॐ सर्पराज्ञे नमः। ॐ संजीवनाय नमः। ॐ जीवनाय नमः। ॐ जगज्जीवाय नमः। ॐ जगत्पतये नमः। ॐ गणैकनेत्रे नमः। ॐ गानपराय नमः। ॐ गानयज्ञाय नमः। ॐ गानसिंघवे नमः। ॐ गानभूषणाय नमः। ॐ गानसमुद्राय नमः। ॐ गानांगज्ञानदृगे नमः। ॐ गानभूतये नमः। ॐ गानोत्सुकाय नमः। ॐ महाभूताय नमः। ॐ महादिव्याय नमः। ॐ महाद्रष्ट्रे नमः। ॐ महाकृताय नमः। ॐ महामायाय नमः। ॐ मायातत्त्वाय नमः। ॐ गतश्रमाय नमः। ॐ ज्ञानविज्ञानसम्पन्नाय नमः। ॐ गानश्रवणलालसाय नमः। ॐ गानयज्ञाय नमः। ॐ

गानप्रणयवते नमः। ॐ गानध्यात्रे नमः। ॐ गानगुणिने नमः। ॐ विश्वप्रियाय नमः। ॐ संविभागिने नमः। ॐ कल्पकर्त्रे नमः। ॐ कल्याणकराय नमः। ॐ परावराय नमः। ॐ परावज्ञाय नमः। ॐ समास्थाय नमः। ॐ अर्थप्रदाय नमः। ॐ देवाधिपतये नमः। ॐ मेरुधाम्ने नमः। ॐ मण्डलिने नमः। ॐ वायुवायवाहनाय नमः। ॐ अनलाय नमः। ॐ स्नेहाय नमः। ॐ अस्नेहाय नमः। ॐ अर्हिताय नमः। ॐ महामुनये नमः। ॐ गंधर्वाय नमः। ॐ विद्वत्तमाय नमः। ॐ विधये नमः। ॐ पतंगाय नमः। ॐ गतिप्रियाय नमः। ॐ सर्वदमनाय नमः। ॐ भावितात्मने नमः। ॐ दीर्घक्रोधाय नमः। ॐ आलोककृते नमः। ॐ नाभये नमः। ॐ आशुवेगाय नमः। ॐ अध्ययनाय नमः। ॐ कालपूजिताय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ कालिकाय नमः। ॐ यज्ञाय नमः। ॐ यज्ञसमाहिताय नमः। ॐ कीर्तिकराय नमः। ॐ वरुचिने नमः। ॐ परंतापाय नमः। ॐ अमरश्रेष्ठाय नमः। ॐ समुदाचाराय नमः। ॐ तमोघ्ने नमः। ॐ अंतःकरणाय नमः। ॐ प्रमतनिद्राय नमः। ॐ भूतेशाय नमः। ॐ गगनस्थाय नमः। ॐ जीवानन्दाय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ वरुणपाशाय नमः। ॐ जगत्स्वामिने नमः। ॐ कंचनवृद्धाय नमः। ॐ कनकाय नमः। ॐ उपकाराय नमः।

ॐ अभिगम्याय नमः। ॐ अमोघाय नमः। ॐ प्रशमाय नमः। ॐ ऋजु-पादभुजाय नमः। ॐ सगणाय नमः। ॐ वीर्यनिधये नमः। ॐ असंगगामिने नमः। ॐ सुरकार्यज्ञाय नमः। ॐ सुरश्रेष्ठाय नमः। ॐ सुरपतये नमः। ॐ वयसांपतये नमः। ॐ संप्रतापनाय नमः। ॐ भूमिजनकाय नमः। ॐ अनिमिषगतये नमः। ॐ सर्वपूजिताय नमः। ॐ कवीशाय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ अंबुजाय नमः। ॐ विश्वकर्मभूतये नमः। ॐ जलेशयाय नमः। ॐ महाक्रोधाय नमः। ॐ अनुकांक्षिणे नमः। ॐ पराय नमः। ॐ अपराय नमः। ॐ सर्वांगरूपाय नमः। ॐ मायाविने नमः। ॐ सत्यशस्त्राय नमः। ॐ विश्वेदेवाय नमः। ॐ अनिलयाय नमः। ॐ अलौकिकाय नमः। ॐ सर्वतोमुखाय नमः। ॐ प्रणताय नमः। ॐ कालानिलद्युतये नमः। ॐ सुखसम्पदाय नमः। ॐ जगतामादिकारणाय नमः। ॐ महेन्द्रमित्राय नमः। ॐ सर्वपतये नमः। ॐ सर्वशत्रुनिवारणाय नमः। ॐ सर्वकल्याणभाजनाय नमः। ॐ वैश्रवणाय नमः। ॐ सर्वाशयाय नमः। ॐ पुण्यसंचयाय नमः। ॐ अतिशांताय नमः। ॐ महागर्भाय नमः। ॐ उरुगाय नमः। ॐ दीर्घलोचनाय नमः। ॐ समायुक्ताय नमः। ॐ लोकेशाय नमः। ॐ अलोकेशाय नमः। ॐ वेदनिलयाय नमः। ॐ प्रकृतिस्थिताय नमः। ॐ

हरिप्रियाय नमः। ॐ मोक्षाधारनिकेतनाय नमः। ॐ राजाधिराजाय नमः। ॐ विद्याधराय नमः। ॐ विषादधुने नमः। ॐ सर्वोपाधि स्थितिकराय नमः। ॐ स्वाहा स्वधा वेदाधिकाराय नमः। ॐ विघ्नदात्रे नमः। ॐ सुगंधप्रियाय नमः। ॐ धर्मप्रवर्तकाय नमः। ॐ वेदप्रतिष्ठाय नमः। ॐ सर्वप्राणपतये नमः। ॐ सुखकराय नमः। ॐ सर्वरत्नविदे नमः। ॐ जगत्कालस्थानाय नमः। ॐ लोकहिताय नमः। ॐ कवचांगाय नमः। ॐ सर्वभूतवादिने नमः। ॐ सर्वभूतनिलयाय नमः। ॐ दिव्यजनमनोहराय नमः। ॐ मायायुक्ताय नमः। ॐ अधिदेवताय नमः। ॐ पुराणप्रभवे नमः। ॐ सत्त्वात्मने नमः। ॐ सप्तसागराय नमः। ॐ सत्यविदे नमः। ॐ सत्त्वसाराय नमः। ॐ सत्यध्यानप्रियाय नमः। ॐ संतापनाशनाय नमः। ॐ सर्वनिर्णयाय नमः। ॐ सर्वसाक्षिणे नमः। ॐ बहुलानन्दवर्धनाय नमः। ॐ अव्यक्तपुरुषाय नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ परात्परविनिर्मुक्ताय नमः। ॐ सत्यप्रकाशात्मने नमः। ॐ भावकरणाय नमः। ॐ भयसंतापनाशनाय नमः। ॐ प्रत्यक्ब्रह्मसनातनाय नमः। ॐ प्रमाणविगताय नमः। ॐ प्रत्याहारिनियोजकाय नमः। ॐ प्रणवाय नमः। ॐ प्रणवातीताय नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ प्रबोधकाम्नाधाराय नमः। ॐ संस्थिताय नमः। ॐ यज्ञाय नमः।

ॐ आवेदनीयाय नमः। ॐ सर्वसंघसुखाय नमः। ॐ तारणाय नमः। ॐ कलाधिपतये नमः। ॐ परात्पराय नमः। ॐ चराचरविकासकृते नमः। ॐ विश्वप्रणवकृते नमः। ॐ नमस्कारप्रियाय नमः। ॐ युगादिकरणाय नमः। ॐ वेदशास्त्राय नमः। ॐ जातवेदसे नमः। ॐ जगद्धृते नमः। ॐ कान्तये नमः। ॐ संयोगवर्धनाय नमः। ॐ गुणाधिकवृद्धाय नमः। ॐ नित्यतृप्ताय नमः। ॐ सुवर्णविज्ञात्रे नमः। ॐ आवर्तमानवपुषे नमः। ॐ वसुश्रेष्ठाय नमः। ॐ अंगिरसयोगिने नमः। ॐ निर्जीवाय नमः। ॐ निधनाय नमः। ॐ महार्णवाय नमः। ॐ पण्डिताय नमः। ॐ मदपाय नमः। ॐ युगरूपाय नमः। ॐ युगकराय नमः। ॐ अधियोगाय नमः। ॐ धर्मकर्म प्रभावकृते नमः। ॐ आधारभूताय नमः। ॐ धनधान्यसमृद्धिने नमः। ॐ संतापसंहर्त्रे नमः। ॐ मनोवांछित दायकाय नमः। ॐ कालाभयनन्तरूपाय नमः। ॐ मुनिवर नमस्कृताय नमः। ॐ सामन्य धनपूजिताय नमः। ॐ समाराधनाय नमः। ॐ भक्तदुःख क्षयकराय नमः। ॐ भवसागर तारकाय नमः। ॐ विसर्गाय नमः। ॐ सकलाध्यक्षाय नमः। ॐ सुमुखाय नमः। ॐ सर्वयुद्धाय नमः। ॐ सुखजाताय नमः। ॐ सर्वकर्मोत्थानाय नमः। ॐ अप्रमेयपराक्रमाय नमः। ॐ दिव्यचैतन्याय नमः। ॐ

देवानां परमागतये नमः। ॐ परंधाम्ने नमः। ॐ परंसुखाय नमः। ॐ व्यवसायफलप्रदे नमः। ॐ योगमायाधराय नमः। ॐ परंतपसे नमः। ॐ योगारीन् प्रकाशाय नमः। ॐ योगपातालाय नमः। ॐ सत्यविद्यानमस्काराय नमः। ॐ जगन्मोहनाय नमः। ॐ इडानाड़ी स्वरूपाय नमः। ॐ मरणदुःख विमोचनाय नमः। ॐ कृपासिंधवे नमः। ॐ कल्पद्रुम निषेविताय नमः। ॐ चिंतामणि प्रियाय नमः। ॐ चिंतासागर वारणाय नमः। ॐ चिंतामणि विभूषिताय नमः। ॐ कुण्डलिने नमः। ॐ विकृताय नमः। ॐ सर्वाश्रयकामाय नमः। ॐ ऊर्ध्वसंहताय नमः। ॐ सर्वदेवमयाय नमः। ॐ सर्वलोककृते नमः। ॐ एकाय नमः। ॐ एकांतिकाय नमः। ॐ नानाभाव विवर्जिताय नमः। ॐ पूर्णविषाय नमः। ॐ नानरूपधराय नमः। ॐ प्राणपंचक निर्मुक्ताय नमः। ॐ कविपंचक वर्जिताय नमः। ॐ निर्वाणाय नमः। ॐ निष्कालाय नमः। ॐ निष्प्रपंचाय नमः। ॐ निराश्रयाय नमः। ॐ निष्ठासर्वज्ञाय नमः। ॐ संसारश्रम नाशकाय नमः। ॐ दूरत्व परिनाशाय नमः। ॐ प्रत्यक् चैतन्यगर्भाय नमः। ॐ आरोग्यसुखदाय नमः। ॐ अनन्तविक्रमाय नमः। ॐ जितसिंधवे नमः। ॐ जयप्रदाय नमः। ॐ जनानन्दाय नमः। ॐ जगत्पापनाशनाय नमः। ॐ तीर्थसेविने नमः। ॐ तीर्थवासिने

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

नमः। ॐ तीर्थनीर निवासकराय नमः। ॐ तपोनिष्ठाय नमः। ॐ तपोधन समाश्रयाय नमः। ॐ त्रैलोक्य वशकराय नमः। ॐ दारिद्रनाशकाय नमः। ॐ दुःखसागर भंजनाय नमः। ॐ कृष्णपिंगलाय नमः। ॐ कृष्णवर्णाय नमः। ॐ ऊर्ध्वगात्मने नमः। ॐ अनन्तरूपाय नमः। ॐ स्वयंभुवे नमः। ॐ अतितेजसे नमः। ॐ जगद्पालकाय नमः। ॐ धर्मवर्धनाय नमः। ॐ अमृताय नमः। ॐ उपद्रष्ट्रे नमः। ॐ वेदसिद्धान्तवेद्याय नमः। ॐ पुरातनाय नमः। ॐ तापत्रयनिवारकाय नमः। ॐ संसारतम नाशकाय नमः। ॐ संकल्पदुःख दहनाय नमः। ॐ तापसोत्तमवंदिताय नमः। ॐ ब्रह्म प्रकाशात्मने नमः। ॐ ब्रह्मविद्या प्रकाशनाय नमः। ॐ सर्वभावविदिताय नमः। ॐ वरेण्याय नमः। ॐ महाप्रसादाय नमः। ॐ प्रयतात्मने नमः। ॐ साध्यर्षये नमः। ॐ सर्वसुसंकल्प विस्तारणाय नमः। ॐ सूक्षात्मने नमः। ॐ सर्वसाधरणाय नमः। ॐ प्रधानधृगे नमः। ॐ जीवसंजीवनाय नमः। ॐ परिक्रमाय नमः। ॐ महाभीमाय नमः। ॐ सर्वभावविनिःसृताय नमः। ॐ अंतःशून्याय नमः। ॐ बहिःशून्याय नमः। ॐ शून्यात्मने नमः। ॐ शून्यभावनाय नमः। ॐ अंतःपूर्णाय नमः। ॐ अनन्तपूर्णाय नमः। ॐ अन्तर्योगिने नमः। ॐ अन्तर्निष्ठाय नमः। ॐ बाह्यांत र्विमुक्ताय नमः। ॐ

कालकालाय नमः। ॐ कैवल्याय नमः। ॐ निगमाश्रयाय नमः। ॐ युक्तसद्गतये नमः। ॐ प्रजाजीवाय नमः। ॐ संख्यासमाय नमः। ॐ पर्यटनपराय नमः। ॐ आयनिर्गमाय नमः। ॐ निर्वाणाय नमः। ॐ मोक्षकराय नमः। ॐ विविक्ताय नमः। ॐ भावाय नमः। ॐ असंवेदिने नमः। ॐ अनाश्रयारंभाय नमः। ॐ देहधर्म विदितात्मने नमः। ॐ सर्वकाम फलप्रदाय नमः। ॐ सर्वकाम निवर्तकाय नमः। ॐ सर्वकाम फलाश्रयाय नमः। ॐ जगद्वपुषे नमः। ॐ मालासप्त प्रवर्तकाय नमः। ॐ संशयार्क वंशकराय नमः। ॐ फलदात्रे नमः। ॐ फलेश्वराय नमः। ॐ फलिरूपाय नमः। ॐ फलिगर्भाय नमः। ॐ बुद्धसार निर्वाणकाय नमः। ॐ शंकरप्रियाय नमः। ॐ भयनाशकाय नमः। ॐ महावताराय नमः। ॐ भारभृते नमः। ॐ भुवन भयाय नमः। ॐ देवासुर गणाश्रयाय नमः। ॐ देवासुर नमस्कृताय नमः। ॐ परागतये नमः। ॐ देवासुर गणाधिपतये नमः। ॐ देवासुरगुरवे नमः। ॐ विश्रामाय नमः। ॐ आत्मसंभवाय नमः। ॐ माननीयाय नमः। ॐ मूर्ताय नमः। ॐ मत्तमातंग विक्रमाय नमः। ॐ मर्मज्ञाय नमः। ॐ मन्दार कुसुमप्रियाय नमः। ॐ यशस्याय नमः। ॐ यशोराशये नमः। ॐ योगकर्त्रे नमः। ॐ योगपालनाय नमः। ॐ राजमण्डल प्रतिष्ठाय नमः। ॐ रक्षोघ्ने

नमः। ॐ वसुधापालकाय नमः। ॐ वायुजीवाय नमः। ॐ वायुबीजाय नमः। ॐ विश्वकराय नमः। ॐ शरणाश्रयाय नमः। ॐ शोभनाय नमः। ॐ सुदर्भाय नमः। ॐ अमराय नमः। ॐ पिलुशाय नमः। ॐ सर्वदेवाय नमः। ॐ सुरगणाय नमः। ॐ अभिरामाय नमः। ॐ सर्वपावनाय नमः। ॐ वज्रिणे नमः। ॐ शान्तिदात्रे नमः। ॐ शान्तिरक्षकाय नमः। ॐ षटचक्र भेदनकराय नमः। ॐ सज्जनप्रियाय नमः। ॐ सर्वपापप्रमोदकराय नमः। ॐ सर्वसाधनाय नमः। ॐ नियमवर्धनाय नमः। ॐ सिद्धभूताय नमः। ॐ भक्तानां सुखदे नमः। ॐ परमागतये नमः। ॐ सर्वानां नमस्कृताय नमः। ॐ सर्वयशस्वरूपाय नमः। ॐ क्षेमप्रदाय नमः। ॐ स्थावरपतये नमः। ॐ वराय नमः। ॐ व्रताधिपाय नमः। ॐ श्रीवर्धनाय नमः। ॐ सकलात्मने नमः। ॐ पूज्याय नमः। ॐ सहस्ररूपाय नमः। ॐ परसंवेदनात्मकाय नमः। ॐ स्वानुसंधानाय नमः। ॐ भोगमोक्ष कलाप्रदाय नमः। ॐ सागराय नमः। ॐ योगिहृदय विश्रामाय नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ रसातलस्थिताय नमः। ॐ शुद्धाय नमः। ॐ सर्वव्याधि निवारकाय नमः। ॐ दुःखस्वप्ननाशकाय नमः। ॐ सौम्याय नमः। ॐ विषबाधा विनाशकाय नमः। ॐ वीर्यातिशय संयुक्ताय नमः। ॐ नागराज्ञे नमः। ॐ धर्मधारकाय

नमः। ॐ भक्तेष्ट दाननिरताय नमः। ॐ प्रसन्नात्मने नमः। ॐ पुरातनाय नमः। ॐ अनन्तनाम्ने नमः। ॐ सुमनसे नमः। ॐ रसातल समाश्रिताय नमः। ॐ वायुभक्षिणे नमः। ॐ धराशायिने नमः। ॐ धर्माऽधर्मविवेचकाय नमः। ॐ पुत्रदाय नमः। ॐ कीर्तिदाय नमः। ॐ सत्याय नमः। ॐ भक्तानाम भयंकराय नमः। ॐ सौभाग्यदाय नमः। ॐ सदासेव्याय नमः। ॐ ज्ञानमार्ग प्रदीपकाय नमः।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi
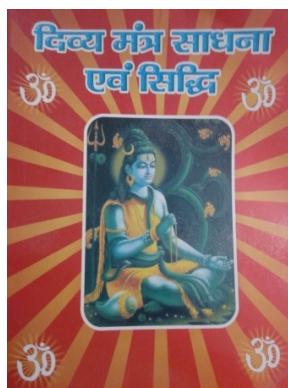
- Shri Baglamukhi Divya Sadhana
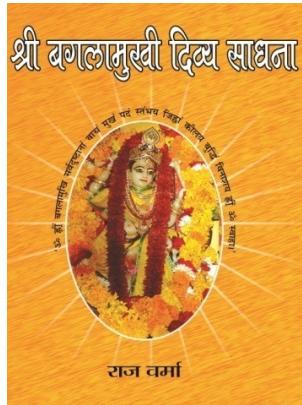
To purchase these books call to Hari Publications.

Mob- 09027154151, 09897035137